कक्षा-3 के लिए अपठित गद्यांश

हमारा बचपन

बचपन वो सुनहरा समय होता है जब जिंदगी की खुशियाँ सबसे सरल और प्यारी होती हैं। मेरे बचपन की यादें आज भी मेरे दिल को गुदगुदाती हैं। मैं एक छोटे से गाँव में पला-बढ़ा, जहाँ पेड़ों की छाया और खेतों की हरियाली ने मेरी खुशियों को और भी रंगीन बना दिया था।

गाँव में मेरे जैसे कई दोस्त थे। हम सब मिलकर एक टोली बना लेते थे। हमारी टोली में सबसे बड़ा सुमित था, जो हमेशा शनिवार की सुबह क्रिकेट का मैच आयोजित करता था। हमारे पास एक पुरानी बॉल और एक टूटे हुए बैट थे। पर क्या फर्क पड़ता था! हमारे पास खेल की उमंग थी और खुशी मनाने की लगन थी। हम घंटों खेलते, कभी जीतते, कभी हारते, लेकिन जीतने की खुशी और हारने का ग़म कभी भी हमारे चेहरे से नहीं हटता था।

गाँव के नंदन वन में जाना हमारा सबसे पसंदीदा शगल था। वहाँ के पेड़ हमारी सबसे अच्छी छाया बनते थे। हम सब मिलकर आम, अमरूद और लीची तोड़ने का काम करते थे। नंदन वन में एक बड़ा सा पुराना बरगद का पेड़ था, जिसके नीचे हम अपनी कहानियों और सपनों की दुनिया बसाते थे। वहाँ हम खजाने की खोज करते, राजकुमारों और राजकुमारियों की कहानी सुनाते, और दूसरे गाँव के रास्तों की कल्पनाएँ करते।

नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

प्र०1. टोली में सबसे बड़ा कौन था?

उत्तर _____

_____

प्र०2. बच्चे नंदन वन में जाकर क्या करते थे?

उत्तर _____

_____

प्र०3. बरगद का पेड़ के नीचे बच्चे क्या करते थे ?

उत्तर _____

_____

प्र०4. ऊपर दिए गए गद्यांश से दो सर्वनाम शब्द ढूंढकर उनका वाक्य बनाएं।

उत्तर 1._____

_____

2. _____

_____